

अनुबंध 1

प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण

वित्तीय प्रणाली के समक्ष प्रमुख जोखिमों के संबंध में बाजार के प्रतिभागियों सहित विशेषज्ञों की राय जानने के लिए अक्टूबर 2014¹ में प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) किया गया, जो इस श्रृंखला का 7वां सर्वेक्षण है। परिणाम यह सूचित करते हैं कि वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करने वाले जोखिमों में अभी भी जोखिम वैश्विक जोखिम तथा समष्टिआर्थिक जोखिम को प्रमुख माना जा रहा है। वैश्विक जोखिम, जो पिछले सर्वेक्षण के दौरान थोड़ा कम हुआ था, की संभावनाएं फिर से बढ़ गईं। फिर भी, बाजार जोखिम की ओर ध्यान देने के बावजूद उसके संबंध में संभावनाएं मध्यम जोखिम की श्रेणी में बनी हुई हैं। पिछले सर्वेक्षण में, मुख्य रूप से तब की विद्यमान मौसम के हालात की अनिश्चित परिस्थितियों के कारण, जिन सामान्य जोखिमों को बड़ा जोखिम माना जा रहा था उनको सर्वेक्षण के वर्तमान दौर में कम माना गया है। संस्थागत जोखिम मध्यम जोखिम श्रेणी में बना हुआ है, हालांकि इसमें कमी आई है (चित्र 1)।

वैश्विक जोखिम के अंतर्गत, सरकारी जोखिम अपरिवर्तित रहा जबकि वैश्विक मंदी का जोखिम थोड़ा बढ़ गया है। इसके अलावा, वैश्विक मुद्रास्फीति जोखिम में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई, वैश्विक निधीयन जोखिम उच्चतर स्थिति में बना रहा।

समष्टिआर्थिक जोखिम की श्रेणी के अंतर्गत, घरेलू आर्थिक संभावना में कमी आने का जोखिम घटकर मध्यम जोखिम की श्रेणी में आ गया है। इसमें, राजनीतिक स्थिरता कायम होने के कारण सरकारी रेटिंग के क्षेत्र में सुस्पष्ट सुधार देखा गया। आश्चर्यजनक रूप से, चालू खाता घाटा (सीएडी) तथा राजकोषीय घाटा के कारण जोखिम की संभावनाएं अपरिवर्तित रहीं जबकि घरेलू मुद्रास्फीति एवं पारिवारिक इकाइयों की बचत के कारण जोखिम की संभावनाओं में कमी आई। समग्ररूप से परिस्थितियों में सुधार होने के बावजूद आधारभूत संरचना के विकास की गति के धीमे होने, पूंजी प्रवाहों, स्थावर संपदाओं की कीमत तथा कॉर्पोरेट क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले जोखिम बढ़कर उच्च जोखिम की श्रेणी में पहुंच गए हैं।

संस्थागत जोखिमों के बीच, बैंकों की आस्तियों की गुणवत्ता चिंता का विषय बनी हुई है जबकि विनियामी जोखिम, परिचालन जोखिम तथा ऋण के कम उठाव के जोखिम तुलनात्मक रूप से बढ़ गए हैं। सामान्य जोखिम के संबंध में, आतंकवाद एवं सामाजिक अशांति से उत्पन्न होने वाले जोखिम की संभावनाएं बढ़ गई हैं (चित्र 2)।

चित्र 1 : प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षणों में चिह्नित किए गए प्रमुख जोखिम समूह (अक्टूबर 2014)									
प्रमुख जोखिम समूह	अक्टू-14	परिवर्तन	अप्रैल-14	परिवर्तन	अक्टू 13	परिवर्तन	अप्रैल-13	परिवर्तन	अक्टू 12
अ. वैश्विक जोखिम		↑		↓		↔		↔	
आ. समष्टिआर्थिक जोखिम		↔		↑		↑		↑	
इ. बाजार जोखिम		↑		↓		↑		↓	
ई. संस्थागत जोखिम		↓		↔		↔		↑	
उ. सामान्य जोखिम		↓		↑		↔		↓	

टिप्पणी :

जोखिम श्रेणी

बहुत अधिक	अधिक	मध्यम	कम	बहुत कम
-----------	------	-------	----	---------

पिछले सर्वेक्षण के बाद से जोखिम में परिवर्तन		
↑	↔	↓
बढ़ा	अपरिवर्तित रहा	घटा

टिप्पणी : जोखिम संभावनाओं के अलग-अलग समय बिंदुओं (अप्रैल और अक्टूबर में अर्द्ध वार्षिक आधार में) पर किए गए प्रणालीगत जोखिमों से उत्पन्न होने के कारण इनमें एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में परिवर्तित हो (बढ़/घट) सकते हैं। इस परिवर्तन को रंग में परिवर्तन द्वारा दर्शाया गया है। हालांकि, समान जोखिम श्रेणी (अर्थात्, समान रंग में दर्शाए गए बॉक्स) में भी जोखिम संभावना बढ़/घट सकती है या अपरिवर्तित रह सकती है, जिनको तीर के निशान के माध्यम से दर्शाया गया है। जोखिम संभावनाओं पर परिवर्तन दो लगातार सर्वेक्षणों के बीच दर्शाया गया है।

स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण - अक्टूबर 2012 से अक्टूबर 2014 (अर्द्ध वार्षिक)।

¹ ये सर्वेक्षण अर्द्ध-वार्षिक आधार पर किए जाते हैं। पहला सर्वेक्षण अक्टूबर 2011 में किया गया था।

चित्र 2 : प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अक्टूबर 2014) में चिह्नित किए गए विभिन्न जोखिम				
जोखिम की मद		अक्टू 14	परिवर्तन	अप्रैल-14
अ. वैश्विक जोखिम	वैश्विक मंदी		↑	
	सरकारी जोखिम/संक्रमण		↔	
	निधीयन जोखिम (बाहरी उधार)		↑	
	वैश्विक मुद्रास्फीति/मण्य मूल्य जोखिम (कच्चे तेल की कीमत सहित)		↓	
	अन्य वैश्विक जोखिम		↑	
आ. समष्टिआर्थिक जोखिम	घरेलू आर्थिक संभावनाओं का कमजोर होना		↓	
	घरेलू मुद्रास्फीति		↓	
	चालू खाता घाटा		↔	
	पूँजीगत अंतर्वाह/बहिर्वाह (एफआईआई का लौटना, एफडीआई में कमी)		↑	
	सरकारी रेटिंग में गिरावट		↓	
	राजकोषीय जोखिम (उच्च राजकोषीय घाटा)		↔	
	कॉर्पोरेट क्षेत्र का जोखिम (उच्च लिवरेज/निम्न लाभकारिता)		↑	
	आधारभूत संरचना के विकास की कमी/धीमी गति		↑	
	स्थायी संपदा के मूल्य		↑	
	पारिवारिक हकाइयों की बचत		↓	
	राजनीतिक जोखिम		↓	
	अन्य समष्टिआर्थिक जोखिम		↓	
	इ. बाजार संबंधी जोखिम	विदेशी मुद्रा दर का जोखिम		↑
इक्विटी मूल्य में उतार-चढ़ाव			↔	
निधीयन जोखिम/चलनिधि जोखिम/ब्याज दर जोखिम			↔	
बाजार संबंधी अन्य जोखिम			↔	
ई. संस्थागत जोखिम	विनियमन जोखिम		↑	
	आस्ति गुणवत्ता में कमी		↔	
	बैंकों की अतिरिक्त पूँजी संबंधी आवश्यकता		↓	
	बैंकों की निधीयन संबंधी मुश्किलें		↑	
	ऋण का धीमा उठाव		↑	
	ऋण में बहुत अधिक वृद्धि		↔	
	परिचालनात्मक जोखिम		↑	
	संस्थागत अन्य जोखिम		↑	
उ. सामान्य जोखिम	आतंकवाद		↑	
	प्राकृतिक आपदा/प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियाँ		↓	
	सामाजिक अशांति (बढ़ती हुई असमानता)		↑	
	अन्य सामान्य जोखिम		↑	

टिप्पणी :
जोखिम श्रेणी

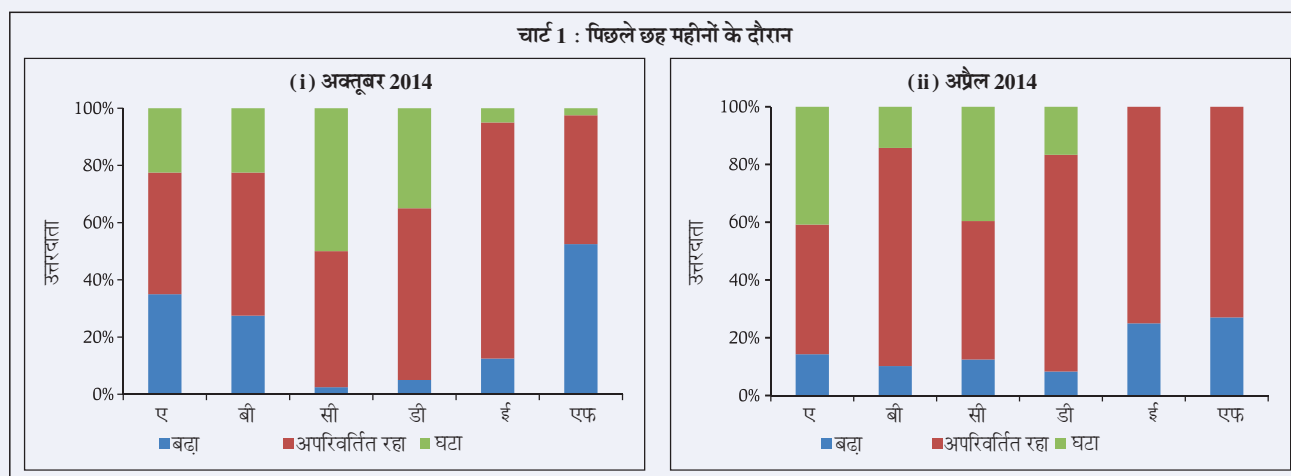
बहुत अधिक	अधिक	मध्यम	कम	बहुत कम
-----------	------	-------	----	---------

पिछले सर्वेक्षण के बाद से जोखिम में परिवर्तन		
↑	↔	↓
बढ़ा	अपरिवर्तित रहा	घटा

टिप्पणी : जोखिम संभावनाओं के अलग-अलग समय बिंदुओं (अप्रैल और अक्टूबर में अर्द्ध वार्षिक आधार में) पर किए गए प्रणालीगत जोखिमों से उत्पन्न होने के कारण इनमें एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में परिवर्तित हो (बढ़/घट) सकते हैं। इस परिवर्तन को रंग में परिवर्तन द्वारा दर्शाया गया है। हालांकि, समान जोखिम श्रेणी (अर्थात्, समान रंग में दर्शाए गए बॉक्स) में भी जोखिम संभावना बढ़/घट सकती है या अपरिवर्तित रह सकती है, जिनको तीर के निशान के माध्यम से दर्शाया गया है। जोखिम संभावनाओं पर परिवर्तन दो लगातार सर्वेक्षणों के बीच दर्शाया गया है।

स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण - अक्टूबर 2014 से अक्टूबर 2014.

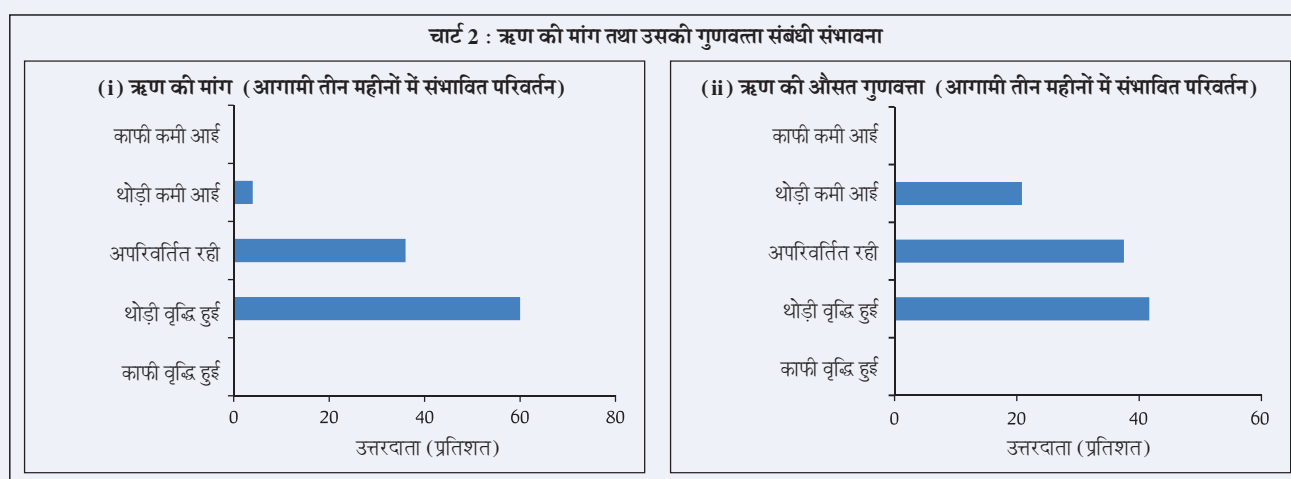
वर्तमान सर्वेक्षण में, प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि आने वाले समय (अल्प से मध्यम अवधि) में वैश्विक वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव वाली घटना के घटित होने की संभावनाएं बढ़ गई हैं जबकि वैश्विक वित्तीय प्रणाली में उनका विश्वास थोड़ा कम हुआ है। हालांकि, आने वाले समय (अल्प से मध्यम अवधि) में भारतीय वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव वाली घटना के घटित होने की संभावना कम मानी गई है। सर्वेक्षण के प्रतिभागियों ने भारतीय वित्तीय प्रणाली पर अधिक विश्वास जताया है (चार्ट 1)।



- नोट :**
- ए. वैश्विक वित्तीय प्रणाली में आने वाले समय में उच्च प्रभाव वाली घटना घटित होने वाली है (अल्पावधि में : 1 वर्ष तक)
 - बी. वैश्विक वित्तीय प्रणाली में आने वाले समय में उच्च प्रभाव वाली घटना घटित होने वाली है (मध्यावधि में : 1 से 3 वर्ष तक)
 - सी. भारतीय वित्तीय प्रणाली में आने वाले समय में उच्च प्रभाव वाली घटना घटित होने वाली है (अल्पावधि में : 1 वर्ष तक)
 - डी. वैश्विक वित्तीय प्रणाली में आने वाले समय में उच्च प्रभाव वाली घटना घटित होने वाली है (मध्यावधि में : 1 से 3 वर्ष तक)
 - ई. समग्र रूप से वैश्विक वित्तीय प्रणाली की स्थिरता पर भरोसा।
 - एफ. समग्र रूप से भारतीय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता पर भरोसा।

स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण - अप्रैल 2014 से अक्टूबर 2014.

आगामी तीन महीनों में ऋण की मांग में संभावित परिवर्तनों के मामले में अधिकांश हिस्सेदारों का मानना था कि इसमें मामूली वृद्धि होने की संभावना है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह महसूस किया कि आगामी तीन महीनों में ऋण की औसत गुणवत्ता में थोड़ा सुधार हो सकता है या इसमें कोई परिवर्तन नहीं होने की संभावना है (चार्ट 2)।



स्रोत: भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण - अक्टूबर 2014.